2 फरवरी 2012, कुल पृष्ठ : 16, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J.P.C / FN-32 / 2012-14

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान देखिये जी-जागरण पर प्रतिदिन प्रात: 6.40 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 34, अंक : 21 सम्पादक : पण्डित रतनचन्द भारिल्ल आजीवन शुल्क : 251 रुपये

फरवरी (प्रथम), 2012 (वीर नि. संवत्-2538) सह-सम्पादक : पण्डित संजीवकुमार गोधा वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

पंचकल्याणक आमंत्रण पत्रिका का भव्य विमोचन

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में होने वाले पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव की तैयारियाँ बहुत जोर-शोर से चल रही हैं। इसी क्रम में यहाँ दिनांक 29 जनवरी को पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव की आमंत्रण पत्रिका का भव्य विमोचन समारोह संपन्न हुआ, जिसमें पत्रिका का विमोचन जयपुर की महापौर श्रीमती ज्योति खण्डेलवाल ने किया।

इस अवसर पर प्रात: तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के प्रवचन का लाभ मिला, जिसमें उन्होंने आदर्श पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव की रूपरेखा प्रस्तुत की। तत्पश्चात् गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के मांगलिक के साथ पत्रिका विमोचन का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ।

कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री सुशीलकुमारजी गोदिका ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमती ज्योति खण्डेलवाल (महापौर-जयपुर) एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री श्यामसिंहजी मान्डा (अध्यक्ष-भवानी निकेतन स्कूल), श्री अजितजी जैन बड़ौदा, श्री कुशलजी वैद अमेरिका, श्री स्वप्निलजी जैन मंगलायतन, श्री महेन्द्रकुमारजी पाटनी (कार्याध्यक्ष-महोत्सव समिति), श्री शान्तिलालजी जैन, श्री नरेशकुमारजी सेठी, श्री राजकुमारजी काला एडवोकेट, श्री प्रमोदजी जैन 'जयपुर प्रिंटर्स', श्री शांतिलालजी गंगवाल, श्री निहालचंदजी जैन, श्री ज्ञानचंदजी झांझरी, श्री अजितजी तोतुका, श्री शांतिलालजी चौधरी

आदि महानुभाव मंचासीन थे। विद्वानों में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर, ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री खनियांधाना, ब्र. यशपालजी जैन जयपुर, पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा इन्दौर, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा आदि उपस्थित थे।

कार्यक्रम के प्रारंभ में पंचकल्याणक का परिचय श्री

शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने दिया। तत्पश्चात् स्वागत भाषण में श्री अजितजी जैन बड़ौदा ने कहा कि इस पंचकल्याणक में लगभग 1000 विद्वानों के साथ लगभग 20 हजार साधर्मियों के पधारने की संभावना है।

अपने उद्बोधन में जयपुर महापौर ने कहा कि जयपुर में होने वाला पंचकल्याणक महोत्सव संपूर्ण गरिमा और भव्यता के साथ संपन्न होगा। यह महोत्सव विश्व पटल पर जयपुर को एक और ऐतिहासिक आयोजन के लिये याद रखेगा। अन्त में श्री महेन्द्रकुमारजी पाटनी जयपुर ने कहा कि इस महोत्सव को सफल बनाने हेतु जयपुर की संपूर्ण जैन समाज को आगे आना चाहिये।

पत्रिका विमोचन समारोह के पूर्व प्रात: 7 बजे से त्रिमूर्ति जिनालय पर श्री आदिनाथ पंचकल्याणक विधान का आयोजन किया गया। विधान के संपूर्ण कार्य पण्डित विरागजी शास्त्री देवलाली एवं पण्डित सोनूजी शास्त्री जयपुर के निर्देशन में संपन्न हुये।

संपूर्ण कार्यक्रम में लगभग 600 साधर्मियों ने बहुत उत्साह के साथ भाग लिया एवं पंचकल्याणक में आने हेतु अपना उत्साह प्रदर्शन भी किया।

कार्यक्रम का मंगलाचरण श्री गौरव जैन जयपुर एवं संचालन श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई ने किया।

पंचकल्याणक की बाह्य क्रियायें तो उनके स्वकाल में हुई हैं। देखो ! यह चैतन्यप्रभु की लीला है कि वह स्व को जानते हुए पर को जान लेता है; परन्तु पर में कुछ करे - ऐसी उसकी लीला नहीं है। **- महामहोत्सव प्रवचन**

सम्पादकीय – ✍ 72

पंचास्तिकाय : अनुशीलन

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

गाथा – ११९

विगत गाथा में पंचेन्द्रिय जीवों में देव, मनुष्य, तिर्यंच एवं नरकगति के भेदों का कथन किया गया है।

अब प्रस्तुत गाथा में कहते हैं कि गतिनाम कर्म व आयुकर्म के समाप्त होने पर जीव अन्य गति प्राप्त करता है। मूल गाथा इसप्रकार है –

खीणे पुव्वणिबद्धे गदिणामे आउसे य ते वि खलु।
पाउण्णंति य अण्णं गदिमाउस्सं सलेस्सवसा।।११९।।

(हरिगीत)

गति आयु जो पूरब बंधे जब क्षीणता को प्राप्त हों।
अन्य गति को प्राप्त होता जीव लेश्या वश अहो।।११९।।

पूर्वबद्ध गतिनामकर्म और आयुकर्म क्षीण होने से वे जीव अपनी लेश्यावश वास्तव में अन्य गति और आयुष्य प्राप्त करते हैं।

आचार्य अमृतचन्द्र टीका में कहते हैं कि यहाँ चारों गतियाँ जीवों को गति नामकर्म और आयुष कर्म के उदय से निष्पन्न होती हैं। इसलिए देवत्वादि अनात्मभूत हैं अर्थात् ये चारों गतियाँ आत्मा का स्वभाव नहीं है।

तात्पर्य यह है कि जीवों को देवत्व आदि की प्राप्ति में पौद्गलिक कर्म निमित्त हैं, इसलिए देवत्वादि जीव का स्वभाव नहीं है।

जीवों को जिसका फल प्रारंभ हो जाता है वह गतिनाम कर्म और आयुकर्म क्रमशः क्षय होते जाते हैं। ऐसा होने पर भी उन्हें कषाय से अनुरंजित योग प्रवृत्ति रूप लेश्या अन्यगति व अन्य आयु का कारण होती है।

इसी के भाव को कवि हीरानन्दजी काव्य में कहते हैं।

(दोहा)

चतु निकाई देव हैं, करम भोग नर–भेद।
तिर्यग बहुत प्रकार हैं, नारक भूगत छेद।।५०।।

(सवैया इकतीसा)

देवगति नाम देव–आयुकर्म उदै सैती,
देवरूप धारी जीव, चतुर निकाय है।
नरगति नाम नर–आयु उदै भये जीव,
करम व भोगभूमि विषै उपजाय है।।
पशुगति–पशु आयु उदैपाय मडी आदि,
पाँचौं इन्द्री विषै भेद बहुधा कहाय है।
नरक गति नरक आयु उदै सात भूमि,
डौले जैन बिना कहौ कैसे कै रहाय है।।५१।।

(दोहा)

जिन सिवगति की गति लखी, तिनगति लखी समस्त।
भवगति गति मैं जै परै, ते भव–गत सुख अस्त।।५३।।

कवि कहते हैं कि देव चार निकाय वाले हैं। मनुष्यों एवं तिर्यंञ्चों में कर्म भूमिज और भोगभूमिज – ऐसे दो भेद हैं। नारकी जीव पृथ्वी के नीचे सात नरकों में रहते हैं। अंत के दोहे में कवि ने कहा है कि जिन्होंने मोक्षमार्ग देख लिया है, उन्होंने अन्य गतियों को ज्ञाता रूप में जाना है तथा जो मिथ्यादृष्टि संसार की गतियों में पड़ गये, उनके सच्चा सुख अस्त हो गया है।

इस गाथा पर प्रवचन करते हुए गुरुदेव श्रीकानजीस्वामी कहते हैं कि व्यवहार से कहें तो पूर्व काल में बाँधे गये गतिनामकर्म तथा आयुकर्म पूरे होने से वे अपना रस देकर खिर जाते हैं तथा निश्चय से कहें तो वे जीव अपनी कषाय गर्भित योगों की प्रवृत्ति रूप लेश्या के प्रभाव से अन्यगति तथा आयु को प्राप्त करते हैं।

उदाहरण देते हुए गुरुदेव कहते हैं कि 'जिस तरह यदि कागज चिपकाना हो तो गोंद चाहिए उसी प्रकार आत्मा को अन्य गति में जाने के लिए क्रोध–मान–माया–लोभ के परिणामों के साथ योगों की प्रवृत्ति रूप गोंद चाहिये। वस्तुतः तो जीव अपने परिणामों के कारण दूसरी गति धारण करता है। 'कर्म के कारण जाता है' – यह कहना तो उपचार मात्र है।

तात्पर्य यह है कि जीवों की गति एवं आयु का बंध क्रोधादि परिणाम व योग की प्रवृत्ति से पड़ता है। जैसे भाव करे वैसा भव मिलता है। पूर्व की आयु खिरती है तथा नवीन आयु बाँधता है। इस प्रकार जैनधर्म के बिना संसार चलता रहता है। जिन जीवों ने मोक्षमार्ग देख लिया है, उन्हें मुक्ति मिल जाती है और जो संसार की गति में पड़ गये, उनको सच्चा सुख नहीं मिलता।''

सम्पूर्ण कथन का सार यह है कि जीव कषायानुरंजित लेश्या के वशीभूत होकर अपने आत्मा को न जानने से संसार–सागर में गोते खाता है। अतः स्वयं के स्वरूप को जानना चाहिए।

गाथा – १२०

विगत गाथा में यह बताया गया है कि देवत्वादि चारों गतियों की प्राप्ति में गतिनामकर्म एवं आयुकर्म निमित्त होते हैं। ये चारों गतियाँ आत्मा का स्वभाव नहीं हैं।

अब प्रस्तुत गाथा में कहते हैं कि ये जीव निकाय देह सहित हैं। इनके दो भेद हैं। १. भव्य तथा २. अभव्य। मूल गाथा इसप्रकार है –

एदे जीवणिकाया देहप्पविचारमस्सिदा भणिदा।
देहविहूणा सिद्धा भव्वा संसारिणो अभव्वा य।।१२०।।

(हरिगीत)

पूर्वोक्ति जीव निकाय देहाश्रित कहे जिनदेव ने।
देह विरहित सिद्ध हैं संसारी भव्य–अभव्य हैं।।१२०।।

इस गाथा में कहा है कि ये समस्त संसारी जीव देह सहित हैं। सिद्ध भगवान देह रहित हैं। संसारी जीव जीवों की अपेक्षा एक जैसे होने पर भी वे भव्य व अभव्य के भेद से दो प्रकार के हैं।

जिनमें शुद्धस्वरूप की प्राप्ति की शक्ति का सद्भाव है, वे भव्य हैं और जिनमें शुद्धस्वरूप की प्राप्ति का असद्भाव है, वे अभव्य हैं।

कवि हीराचन्दजी उक्त कथन को काव्य में कहते हैं।

(दोहा)

एई जीव निकाय सब, देह विषय आधीन।
देह विहीना सिद्ध हैं, भव्याभव्य मलीन।।५८।।

(सवैया इकतीसा)

जेते जगवासी जीव तेते देहधारी सबै,
देह कै अधारी सिद्ध सिद्धगति विषै हैं ।
शुद्ध होने जोग भव्य, होने जोग नाहिं सुद्ध,
ते अभव्य जगमाहिं दौनौ रासि दिखै हैं ।।
जैसें मूग पकै एक, एक पके नाहिं किहू,
वस्तु का सुभाव ऐसा साहजीक लिखै हैं ।।
जाकैं भेद सत्ता जग्या जथारूप जैसा,
सोई सुद्ध पथ पावै जिनराज सिखै हैं।।५९ ।।

(दोहा)

सिद्धरूप जिनकै हियै, सिद्ध भयौ पर त्यागि ।
तेई सिद्ध सुभाव तैं, सिद्ध भये जग जागि।।६०।।

कवि उक्त पद्यों में कहते हैं कि चारों गति के संसारी जीव समूह देह और विषयों के आधीन हैं तथा सिद्ध जीव देह रहित हैं। संसारी जीवों में भव्य और अभव्य – ऐसे दो प्रकार होते हैं। जितने संसारी जीव हैं, वे सब देहधारी हैं तथा सिद्ध जीव देहरहित होते हैं। जो शुद्ध होने योग्य हैं, वे भव्य हैं, जो कभी सिद्ध नहीं होते हों, वे अभव्य जीव हैं।

गुरुदेवश्री कानजीस्वामी इस गाथा पर प्रवचन करते हुए कहते हैं कि 'मैं आत्मा ज्ञाता द्रव्य हूँ' ऐसे भानपूर्वक जो अन्तर में शान्ति व आनंद प्रगट होता है, वह धर्म है तथा इससे विपरीत जिसे संयम का सेवन कष्टदायक लगता है, वह अधर्म है। अज्ञानी जीव चारित्र को दुःखदायक मानते हैं तथा 'ऐसा मानते हैं कि मैं पर पदार्थ का अनुभव करता हूँ, जबकि वह परपदार्थ नहीं' बल्कि परपदार्थ के प्रति अपने राग का ही अनुभव करता है।

आत्मा के भानपूर्वक राग पर से दृष्टि उठाकर जो रागरहित आत्मा का वेदन करता है, वह धर्म है। आत्मा का स्वभाव तीनलोक व तीन काल के पदार्थों को जानने का है – जो ऐसी पहचान करता है, वह भव्य है।''

इसप्रकार स्व–पर की सामर्थ्य जानकर यदि हम अपने आत्मा को जानें, पहचानें उसी में जम जायें, रम जायें तो परमात्मा बन सकते हैं।●

मोक्षमार्गप्रकाशक - एक अद्भुत एवं नूतन प्रयोग

आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी द्वारा रचित महान और अपूर्व ग्रन्थ श्री मोक्षमार्गप्रकाशक जैन समाज का अत्यन्त महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ को जन–जन तक पहुँचाने हेतु अब ऑडियो बुके के रूप में तैयार किया गया है। इसके अन्तर्गत संपूर्ण मूल ग्रन्थ को श्री सौरभ शास्त्री इन्दौर ने अथक परिश्रम से अपना स्वर प्रदान करके ग्रन्थ को सी.डी. के रूप में तैयार किया है। अब आप इसे पढने के साथ सुनने का लाभ भी ले सकते हैं। लगभग 16 घण्टे के इस ऑडियो ग्रन्थ की प्रस्तावना का कार्य डॉ.हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा किया है। इस कार्य को संपन्न करने में विशेष सहयोग श्री विरागजी शास्त्री देवलाली और आर्थिक सहयोग श्री राजेशजी प्रकाशजी लुहाड़िया इन्दौर द्वारा किया गया।

सी.डी. के निर्देशक श्री गौरवजी शास्त्री इन्दौर हैं। इस सी.डी. को 'श्री कुन्दकुन्द कहान यंग एसोसिएशन' ने तैयार किया है। इस सी.डी. को आप जयपुर पंचकल्याणक के अवसर पर प्राप्त कर सकते हैं।

आर्ट ऑफ हैप्पी लिविंग सेमिनार संपन्न

हैदराबाद (आन्ध्रप्रदेश) : यहाँ हिमायत नगर में दिनाँक 8 जनवरी 2012 को JIWO (Jain International Women's organization), JITO (Jain International trade organization) एवं अन्य संगठनों के तत्त्वावधान में छठवें आर्ट ऑफ हैप्पी लिविंग सेमिनार का आयोजन किया गया।

इस वर्कशॉप में विभिन्न धार्मिक गेम/एक्टिविटी के माध्यम से आध्यात्मिक सिद्धान्तों का भाव–भासन करने पर जोर दिया गया, इससे जिनागम की सिद्धान्तपरक बातों को जीवन में उतारने का औचित्य ख्याल में आया।

आज का युवा वर्ग धर्म को मात्र खाने–पीने के संयम और पूजा–पाठ तक ही सीमित समझता है, अन्य लोग भी अध्यात्मिक सिद्धांतों को बुद्धि से समझ तो लेते हैं; पर जीवन का अंग नहीं बनाते। जीवन की हर समस्या का समाधान उनसे नहीं ढूँढते हैं। आध्यात्मिक सिद्धांतों को पढना अलग बात है और उनको जीना अलग बात है। आर्ट ऑफ हैप्पी लिविंग वर्कशॉप का उद्देश्य यही भावभासन कराना है कि अध्यात्म मात्र आगामी सुख के लिए ही नहीं; बल्कि वर्तमान में हमारे जीवन को शांत और सुखमय बनाने में अत्यंत सक्षम है।

वर्कशॉप को 12 लोगों की टीम में बांटा गया। इसके प्रारंभ में सभी को अपनी समस्याओं को एक कागज पर लिखने का निर्देश दिया गया। अन्त में आध्यात्मिक सिद्धांतों के माध्यम से सभी समस्याओं का समाधान किया गया।

इस वर्कशॉप में सरल भाषा व रोचक शैली में क्रमबद्धपर्याय, वस्तु–स्वातंत्र्य, अकर्तावाद, उपयोग का प्रयोग, पर्याय की क्षणभंगुरता आदि आध्यात्मिक सिद्धांतों को प्रतिदिन अपने जीवन में अपनाने का तरीका बताया गया।

इस अवसर पर श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, विदुषी शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई एवं विदुषी स्वानुभूति जैन मुम्बई ने आध्यात्मिक सिद्धांतों को बहुत सरल भाषा में प्रस्तुत किया।

यह सेमिनार रात्रि 9 बजे संपूर्ण हुआ। अन्त में श्री डी.सी. गेलडा (कोऑर्डिनेटर–स्पेशल प्रोजेक्ट्स ग्रुप ऑफ जीतो (JITO) हैदराबाद) द्वारा धन्यवाद ज्ञापित किया गया। उन्होंने संस्कार एक्टिविटी टीम के सदस्यों श्रीमती स्नेहलता गेलडा, श्रीमती पुष्पा कीमती, श्रीमती सरला भुटोरिया, श्रीमती ममता सांखला, श्रीमती रेणुका चौरडिया, श्रीमती मधु सुराना, श्रीमती निशा शाह, श्रीमती आशा पहाडा, श्रीमती छाया मुनोत और श्रीमती कुसुम मुनोत का भी धन्यवाद ज्ञापित किया। उन्होंने JIWO के मैनेजिंग कमेटी के सदस्यों श्रीमती कस्तूरी मूथा (अध्यक्ष), राजकुमारी चौरडिया (चैयरमेन), मंजु दुग्गड (चीफ सेक्रेटरी) और वीणा ओसवाल (कोषाध्यक्ष) को भी बधाई दी।

अनेक लोगों ने प्रथम बार जैन सिद्धांतों को जीवन में सुख–शान्ति लाने के दृष्टिकोण से देखा था; अत: उन्होंने अपने–अपने नगरों में भी इस वर्कशॉप को करने की भावना व्यक्त की।

इस वर्कशॉप को अपने शहर में आयोजित करवाने अथवा इसके विषय में विस्तृत जानकारी हेतु संपर्क करें – डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया, 09321295265/09821923722

पंचकल्याणक के पात्रों का –

अभिनन्दन समारोह संपन्न

इन्दौर (म.प्र.) : यहाँ साधना नगर में दिनांक 26 जनवरी को श्री पंचबालयति जिनमंदिर में जयपुर और अजमेर में होने वाले पंचकल्याणक महोत्सव के प्रमुख पात्रों का सम्मान किया गया।

इस अवसर पर पण्डित विरागजी शास्त्री देवलाली के प्रवचन का लाभ मिला। इसके पश्चात् पात्रों का अभिनन्दन किया गया। इसके अन्तर्गत **जयपुर पंचकल्याणक** के सौधर्म इन्द्र और शची इन्द्राणी श्री अशोकजी जैन (अरिहंत केपिटल) और श्रीमती किरण जैन, इन्द्र–इन्द्राणी श्री सिद्धार्थ–कीर्ति बड़जात्या, राजा–रानी श्री राकेश–अनिता बज, श्री सौरभ–श्वेता जैन, श्री गौरव–श्रद्धा जैन, प्रतिमा विराजमानकर्त्ता डॉ. अशोकजी, चरण विराजमानकर्त्ता श्री मांगीलालजी नरसिंहपुरा का एवं **अजमेर पंचकल्याणक** में माता–पिता बनने का सौभाग्य लेने वाले श्री प्रकाशचंदजी लुहाड़िया और श्रीमती शशिप्रभाजी, इन्द्र–इन्द्राणी श्री जितेन्द्र–कुसुम सेठी का सम्मान किया गया।

ज्ञातव्य है कि जयपुर पंचकल्याणक में कुबेर–कुबेराणी श्री मुकेशजी जैन एवं श्रीमती सोनल जैन इन्दौर बन रहे हैं।

जयपुर पंचकल्याणक महोत्सव समिति के महामंत्री श्री अशोकजी बड़जात्या ने महोत्सव का आमंत्रण दिया।

समारोह के अवसर पर श्री आदिनाथ विधान का भी आयोजन किया गया। विधि विधान के संपूर्ण कार्य पण्डित विवेकजी दलपतपुर, पण्डित सुमितजी छिन्दवाड़ा एवं पण्डित सौरभजी खड़ैरी द्वारा संपन्न हुये।

कार्यक्रम का संचालन श्री विजयजी बड़जात्या और पण्डित सौरभजी शास्त्री ने किया। आभार प्रदर्शन श्री मनोहरलालजी काला व श्री पदमजी पहाड़िया ने किया।

श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में होने वाले पंचकल्याणक हेतु –

मालवा प्रान्त में पंचकल्याणक आमंत्रण

मालवा प्रान्त में दिनांक 26 से 28 जनवरी तक विभिन्न मंडलों में पंचकल्याणक आमंत्रण दिया गया।

इस अवसर पर इन्दौर, शुजालपुर मण्डी, उज्जैन, रतलाम, मन्दसौर आदि स्थानों पर पंचकल्याणक का आमंत्रण दिया गया।

सभी स्थानों पर पण्डित विरागजी शास्त्री देवलाली द्वारा विभिन्न विषयों पर प्रवचनों का लाभ मिला। इनके अतिरिक्त पण्डित सुमितजी शास्त्री छिन्दवाड़ा का भी सहयोग प्राप्त हुआ।

प्रत्येक स्थान पर पंचकल्याणक का बड़े उत्साह व भक्तिभावपूर्वक सभी लोगों को पंचकल्याणक में आने का आमंत्रण दिया गया। पंचकल्याणक महोत्सव में जयपुर आने हेतु कलशों एवं आवास आदि की बुकिंग भी करायी।

इस अवसर पर रतलाम में जिनमंदिर में प्रतिमा विराजमान दिवस बहुत उत्साहपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर जिनेन्द्र पूजन का भी आयोजन किया गया।

इसप्रकार विगत छह माह में संपूर्ण देश के लगभग संपूर्ण मंडलों में आमंत्रण कार्यक्रम संपन्न हुआ।

साप्ताहिक गोष्ठियाँ संपन्न

जयपुर (राज.) : (1) यहाँ श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय में आयोजित होने वाली साप्ताहिक गोष्ठियों के अन्तर्गत दिनांक 22 जनवरी को **'पुराण और पुराणकार'** विषय पर शास्त्री वर्ग की एक गोष्ठी का आयोजन किया गया।

गोष्ठी की अध्यक्षता पण्डित तपिशजी शास्त्री उदयपुर ने की। गोष्ठी में प्रथम स्थान सर्वज्ञ भारिल्ल एवं द्वितीय स्थान अर्पण जैन ने प्राप्त किया।

गोष्ठी का संचालन सुधर्म मुडलगी एवं देवांग गाला ने किया। आभार प्रदर्शन पण्डित सोनूजी शास्त्री ने किया।

(2) दिनांक 29 जनवरी को **'पंचभाव–एक अनुशीलन'** विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया।

गोष्ठी की अध्यक्षता पण्डित विरागजी शास्त्री देवलाली ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री दलपतपुर उपस्थित थे।

गोष्ठी में प्रथम स्थान सौरभ जैन एवं द्वितीय स्थान हर्षित जैन ने प्राप्त किया। मंगलाचरण संदेश जैन एवं संचालन अभिषेक सिलवानी ने किया।

शोक समाचार

1. सागर (म.प्र.) निवासी श्रीमती कस्तूरीबाई धर्मपत्नी स्व.श्री सेठ सुन्दरलालजी जैन का दिनांक 16 जनवरी को 84 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया।

आप अत्यंत तत्त्वरसिक महिला थीं, जयपुर शिविर में भी तत्त्व का लाभ लिया करती थीं। आपकी स्मृति में वीतराग–विज्ञान एवं जैनपथप्रदर्शक हेतु 500–500/– रुपये प्राप्त हुये।

2. करहल–मैनपुरी (उ.प्र.) निवासी श्री वीरेन्द्रकुमारजी जैन 'कुमुद' का दिनांक 24 दिसम्बर 2011 को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के अनन्य भक्त थे।

आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग–विज्ञान हेतु 251–251/– रुपये प्राप्त हुये।

3. बण्डाबेलई– सागर(म.प्र.) निवासी श्रीमती सुशीला पटारी धर्मपत्नी श्री मुलायमचंदजी पटारी का दिनांक 26 दिसम्बर को शांत परिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी महिला थीं। आपकी स्मृति में वीतराग–विज्ञान एवं जैनपथप्रदर्शक हेतु 100–100 /– रुपये प्राप्त हुये।

4. विदिशा (म.प्र.) निवासी डॉ. विद्यानन्दजी का 65 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। तारण समाज के होते हुए भी गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के प्रति आपकी अच्छी आस्था थी।

प्रारंभ में जब जैनपथप्रदर्शक विदिशा से प्रकाशित होता था, तब आप उसके प्रबंध सम्पादक रहे। आप पण्डित रतनचंदजी के सम्मान में प्रकाशित अभिनन्दन ग्रन्थ के सम्पादक मण्डल में भी थे।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही चतुर्गति के दु:खों से छूटकर अभ्युदय को प्राप्त हों – यही मंगल भावना है।

स्वर्ण कलश एवं ध्वजारोहण संपन्न

खतौली (म.प्र.) : यहाँ श्री 1008 चन्द्रप्रभ दिगम्बर जैन मंदिर पीसनोपाड़ा के शिखर पर दिनांक 7 से 9 जनवरी 2012 तक स्वर्ण कलश एवं ध्वजादंड स्थापना महोत्सव एवं विश्व शांति महायज्ञ का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित ज्ञानचंदजी विदिशा, पण्डित मांगीलालजी कोलारस, पण्डित अनिलकुमारजी भिण्ड, डॉ. नेमचंदजी खतौली, डॉ. मनीषजी शास्त्री खतौली आदि विद्वानों के प्रवचनों का लाभ मिला।

दिनांक 7 जनवरी को प्रात: 9 बजे श्री 1008 चन्द्रप्रभ दिगम्बर जैन मंदिर से श्रीजी की विशाल शोभा यात्रा निकाली गई। रात्रि में वीतराग-विज्ञान पाठशाला खतौली द्वारा तत्त्वज्ञान से ओतप्रोत सांस्कृतिक कार्यक्रम का किया गया। कार्यक्रम का संचालन पाठशाला संचालिका श्रीमती आभा जैन एवं श्री राजकुमारजी जैन द्वारा किया गया।

दिनांक 8 जनवरी को प्रात: यागमंडल विधान यज्ञनायक, सौधर्म, कुबेर, मुख्य कलशारोहणकर्त्ता आदि 24 इन्द्रों के साथ किया गया। दोपहर में भव्य घटयात्रा निकाली गई एवं रात्रि में इन्द्र सभा द्वारा आध्यात्मिक चर्चा का मंचन किया गया।

दिनांक 9 जनवरी को प्रात: श्रीजी की शोभायात्रा निकाली गई, जिसमें भजनमंडली आकर्षण का केन्द्र रही। तत्पश्चात शिखर पर स्वर्ण कलश एवं ध्वजारोहण किया गया। रात्रि में भजन संध्या का आयोजन किया गया।

मुख्य कलशारोहण श्री पंकजजी जैन खतौली परिवार ने एवं अन्य दिशाओं का कलशारोहण क्रमश: श्री रमेशचंदजी जैन अम्बाला, श्री पुष्पेन्द्रजी जैन परिवार ननौता व श्री दीपकजी जैन परिवार खतौली द्वारा किया गया। ध्वजादंड आरोहण श्री मनोजकुमार जैन दिनेशकुमार जैन दिल्ली परिवार ने किया। समारोह में यज्ञनायक श्री पंकजजी जैन दिल्ली, सौधर्म इन्द्र श्री शशांकजी जैन खतौली एवं कुबेर श्री मनोजजी जैन दिल्ली को बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

विधि-विधान के संपूर्ण कार्य ब्र.जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली के निर्देशन में पण्डित सुनीलजी शास्त्री 'धवल' व पण्डित कांतिकुमारजी द्वारा संपन्न कराये गये।

संपूर्ण कार्यक्रम पण्डित सोनूजी शास्त्री जयपुर एवं पण्डित कल्पेन्द्रजी के कुशल निर्देशन में संपन्न हुये। कार्यक्रम में संपूर्ण जैनसमाज का सराहनीय सहयोग रहा।

कार्यक्रम में जयपुर में होने वाले पंचकल्याणक का आमंत्रण भी दिया गया, जिसमें अनेक लोगों ने आने का निश्चय किया।

- जिनेन्द्र कुमार जैन

सूचना

मुमुक्षु समाज के विवाह योग्य युवक-युवतियों हेतु प्रकाशित पत्रिका 'मुमुक्षु मण्डप' के आवेदन फार्म भरकर आप जयपुर में होने वाले पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के अवसर पर जमा करा सकते हैं। - सर्वोदय ज्ञानपीठ, 8796801361

पंचकल्याणक हेतु शास्त्री विद्वानों का अभूतपूर्व सहयोग

पण्डित टोडरमल स्मारक भवन में फरवरी माह में होने जा रहे पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव हेतु संपूर्ण मुमुक्षु समाज का उत्साह देखने को मिल रहा है। श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धांत महाविद्यालय के भूतपूर्व स्नातक विद्वान भी इस महामहोत्सव को सफल बनाने के लिए तन-मन-धन से सक्रिय सहयोग प्रदान कर रहे हैं। पण्डित टोडरमल स्नातक परिषद की विशेष योजना में अब तक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा फंड की विभिन्न मदों में 171 शास्त्री विद्वानों ने लगभग 23 लाख 12 हजार 511 रुपये की राशि सहयोग स्वरूप प्रदान की है। जिसकी सूची जनवरी (प्रथम) के अंक तक प्रकाशित हो चुकी है। इसके पश्चात् भी अनेक शास्त्री विद्वानों द्वारा सहयोग राशि प्राप्त होने का सिलसिला चालू है। 1 जनवरी से 30 जनवरी के बीच जो स्वीकृतियाँ आई हैं, उनकी सूची निम्नानुसार है -

1,00,000/- रुपये **पण्डित रावसाहेबजी नरदेकर**

11000/- रुपये देने वाले महानुभाव : पण्डित अरुणकुमारजी शास्त्री सूरत, पण्डित भानुकुमारजी शास्त्री ललितपुर, पण्डित रीतेशजी शास्त्री अहमदाबाद, पण्डित सुनीलकुमारजी शास्त्री ग्वालियर, पण्डित सौरभजी शास्त्री शाहगढ।

5555/- रुपये **पण्डित सजलजी शास्त्री सिंगोड़ी**

5100/- रुपये देने वाले महानुभाव : पण्डित अजितकुमारजी हवाले, पण्डित आशीषजी शास्त्री देवडिया, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री काणे, पण्डित आदेशजी बोरालकर, पण्डित भरतकुमारजी शाह, पण्डित एलनजी गोवन पोज्जल, पण्डित पी.जयराजनजी जैन, पण्डित महेन्द्रजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित मोहितजी शास्त्री अरथुना, पण्डित नितिनजी कोठेकर सांगली, पण्डित पवनकुमारजी शास्त्री मदनगंज, पण्डित रविकुमारजी शास्त्री इन्दौर, पण्डित संजयकुमारजी सिंघई रठलाई, पण्डित सुधाकरजी शास्त्री इण्डी, पण्डित जयेशजी रोकड़े मालेगांव, पण्डित आकाश शास्त्री डडूका, पण्डित रितेशजी शास्त्री सनावद, पण्डित आदित्यजी शास्त्री खुरई, पण्डित नवीनजी शास्त्री, पण्डित सुशीलजी शास्त्री फुटेरा।

262555/- रुपये (कुल राशि)

जिनमंदिर का वार्षिकोत्सव पूरे उत्साह सहित संपन्न

जबलपुर (म.प्र.) : यहाँ बड़ा फहारा स्थित श्री महावीरस्वामी दिगम्बर जिनमंदिर की बारहवीं वर्षगांठ के अवसर पर दिनांक 10 से 17 जनवरी तक कल्पद्रुम मण्डल विधान बहुत उत्साह के साथ संपन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन द्वारा प्रात: विधान की जयमाला पर एवं रात्रि को द्रव्यदृष्टि प्रकाश के बोलों पर विशेष व्याख्यान हुये। व्याख्यान के पश्चात् रोचक और गंभीर शैली में पौराणिक कथायें, जैनत्व का इतिहास, शंका-समाधान जैसे तात्त्विक कार्यक्रम हुये। इसके अतिरिक्त पण्डित सुधीरजी शास्त्री के एक व्याख्यान का भी लाभ मिला।

विधान के मुख्य आमंत्रणकर्त्ता श्री मुन्नालालजी राजेश जैन परिवार थे।

विधि-विधान के संपूर्ण कार्यक्रम पण्डित संजयजी शास्त्री के निर्देशन में श्री मनोजजी, श्री श्रेणिकजी, पण्डित विरागजी शास्त्री द्वारा संपन्न कराये गये।

कार्यक्रम में 1 से 8 मई तक बाल संस्कार शिविर के आयोजन की घोषणा भी की गई। आयोजन में मंगलायतन के महासचिव श्री स्वप्निलजी जैन की विशेष उपस्थिति रही।

मोक्षमार्ग प्रकाशक का सार

89

– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

पच्चीसवाँ प्रवचन

यह मोक्षमार्गप्रकाशक शास्त्र का नौवाँ अधिकार है। **आरंभ के सात अधिकारों में मंगलाचरणादि के उपरान्त अगृहीत-गृहीत मिथ्यादर्शन-ज्ञान-चारित्ररूप संसारमार्ग का निरूपण विस्तार से किया गया** और आठवें अधिकार में उपदेश का स्वरूप बताया गया।

नौवें अधिकार में अबतक यह बताया जा चुका है कि आत्मा का हित मोक्ष ही है और उसका उपाय तत्त्वज्ञान की सच्ची समझ में ही निहित है; अत: **अपने उपयोग को प्रयोजनभूत तत्त्वों के निर्णय में लगाना ही हम सबका परम कर्त्तव्य है।**

अब मोक्षमार्ग के स्वरूप की चर्चा आरंभ करते हुए पण्डित टोडरमलजी लिखते हैं –

''वहाँ कारण तो अनेक प्रकार के होते हैं। कोई कारण तो ऐसे होते हैं, जिनके हुए बिना तो कार्य नहीं होता और जिनके होने पर कार्य हो या न भी हो। जैसे – मुनिलिंग धारण किये बिना तो मोक्ष नहींहोता; परन्तु मुनिलिंग धारण करने पर मोक्ष होता भी है और नहीं भी होता।

तथा कितने ही कारण ऐसे हैं कि मुख्यत: तो जिनके होने पर कार्य होता है, परन्तु किसी के बिना हुए भी कार्यसिद्धि होती है। जैसे – अनशनादि बाह्यतप का साधन करने पर मुख्यत: मोक्ष प्राप्त करते हैं; परन्तु भरतादिक के बाह्य तप किये बिना ही मोक्ष की प्राप्ति हुई।

तथा कितने ही कारण ऐसे हैं कि जिनके होने पर कार्यसिद्धि होती ही होती है, और जिनके न होने पर सर्वथा कार्यसिद्धि नहीं होती। जैसे – सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र की एकता होने पर तो मोक्ष होता ही होता है, और उनके न होने पर सर्वथा मोक्ष नहीं होता।

– ऐसे यह कारण कहे, उनमें अतिशयपूर्वक नियम से मोक्ष का साधक जो सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र का एकीभाव सो मोक्षमार्ग जानना। इन सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान-सम्यक्चारित्र में एक भी न हो तो मोक्षमार्ग नहीं होता।''[१]

उक्त कारणों में अनशनादि बाह्य तप तो मात्र नाम के कारण हैं; क्योंकि उनके होने पर मुक्ति की प्राप्ति होगी ही – इस बात की गारंटी तो है ही नहीं; पर उनके बिना भी मुक्ति की प्राप्ति हो जाती है। **उनको तो मात्र इसलिए कारण कह दिया है कि ये अधिक काल तक मुक्ति के मार्ग में चलनेवालों के प्राय: होते देखे जाते हैं।**

यद्यपि यह परम सत्य है कि मुनिलिंग धारण किये बिना मुक्ति की प्राप्ति नहीं होगी; तथापि मुनिलिंग धारण करने पर हो ही जावेगी – इस बात की गारंटी नहीं है; अत: यह कारण भी नियामक कारण नहीं है।

मुक्ति का एकमात्र नियामक कारण तो सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र की एकता है। यही कारण है कि जिनागम में सर्वत्र मुक्ति के मार्ग के रूप में इनका ही प्रतिपादन होता है।

ध्यान रहे, ये अलग-अलग तीन मार्ग नहीं हैं, अपितु तीनों मिलकर एक मार्ग हैं।

अब इन सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र के स्वरूप पर विस्तार से विचार करते हैं। सबसे पहले सम्यग्दर्शन की चर्चा आरंभ करते हैं।

लक्षण द्वारा ही लक्ष्य की पहिचान होती है और लक्षण अव्याप्ति, अतिव्याप्ति और असंभव दोष से रहित होना चाहिए। जो लक्षण पूरे लक्ष्य में व्याप्त न हो, वह लक्षण अव्याप्ति दोष से दूषित है और जो लक्षण लक्ष्य में तो व्याप्त हो, पर अलक्ष्य में भी पाया जाये, वह अतिव्याप्ति दोष से दूषित है तथा जो लक्षण लक्ष्य में हो ही नहीं, वह असंभव दोष से दूषित है।

जीव, अजीव, आस्रव, बंध, संवर, निर्जरा और मोक्ष – ये सात तत्त्वार्थ हैं और इनका विपरीत अभिनिवेश (उल्टी मान्यता) रहित श्रद्धान सम्यग्दर्शन है।

सम्यग्दर्शन का उक्त लक्षण सभी सम्यग्दृष्टियों में पाया जाता है और किसी भी मिथ्यादृष्टि में नहीं पाया जाता; इसलिए इसमें न तो अव्याप्ति दोष है और न अतिव्याप्ति दोष है; क्योंकि सच्चा तत्त्वार्थ श्रद्धान मात्र सम्यग्दृष्टि के ही होता है।

प्रत्येक सम्यग्दृष्टि के नियम से पाया जाने के कारण इसमें असंभव दोष भी नहीं है।

उक्त लक्षण पुरुषार्थसिद्ध्युपाय नामक ग्रंथ में पाया जाता है; जो इसप्रकार है –

जीवाजीवादीनां तत्त्वार्थानां सदैव कर्त्तव्यम्।
श्रद्धानं विपरीताभिनिवेशविविक्तमात्मरूपं तत्।।[१]

जीवाजीवादि तत्त्वार्थों का विपरीताभिनिवेश से रहित श्रद्धान ही सम्यक्त्व है; अत: उन जीवादि तत्त्वार्थों का सदा श्रद्धान करना चाहिए; क्योंकि वह श्रद्धान आत्मस्वरूप ही है।

आचार्य अमृतचन्द्र का पण्डित टोडरमलजी पर पर्याप्त प्रभाव है। रहस्यपूर्ण चिट्ठी में भी वे लिखते हैं कि वर्तमानकाल में **अध्यात्मतत्त्व तो आत्मख्याति-समयसारग्रन्थ की अमृतचन्द्र आचार्यकृत संस्कृत टीका- में है।** जब मोक्षमार्गप्रकाशक का सातवाँ अधिकार

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, नौवाँ अधिकार, पृष्ठ ३१३-३१४

१. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय, छन्द २२

लिखा जा रहा था, उसीसमय उन्होंने पुरुषार्थसिद्धयुपाय की टीका लिखना आरंभ किया था। यही कारण है कि पुरुषार्थसिद्धयुपाय की पण्डित टोडरमलजी कृत हिन्दी टीका के मंगलाचरण पर मोक्षमार्गप्रकाशक के सातवें अधिकार का प्रभाव देखने में आता है। मंगलाचरण का उक्त छन्द इसप्रकार है –

(मनहरण)

कोई नर निश्चय से आत्मा को शुद्ध मान,
भये हैं स्वच्छन्द न पिछानें निज शुद्धता।
कोई व्यवहार दान शील तप भाव ही कौ,
आतम कौ हित जानि छोड़ै नहीं मुद्धता।
कोई व्यवहारनय निश्चय के मारग कौ,
भिन्न–भिन्न जानि, पहचानि करै उद्धता।
जब जाने, निश्चय के भेद व्यवहार सब,
कारण को उपचार माने तब बुद्धता।।[१]

उक्त छन्द में निश्चयाभासी, उभयाभासी और सम्यक्त्व के सन्मुख मिथ्यादृष्टियों का उल्लेख तो हो ही गया है, संक्षेप में उनका स्वरूप भी आ गया है। मोक्षमार्गप्रकाशक के सातवें अधिकार में भी इन्हीं का विस्तार से विवेचन है।

दुर्भाग्य की बात यह है ये दोनों ग्रन्थ ही पूर्ण न हो सके। टीका ग्रंथ होने से अधूरी पुरुषार्थसिद्धयुपाय टीका को तो उनके ही समकालीन पण्डित दौलतरामजी कासलीवाल ने पूरी कर दी; किन्तु मौलिक ग्रन्थ होने से अधूरे मोक्षमार्गप्रकाशक का काम हाथ में लेने की हिम्मत कोई न जुटा सका। ब्र. शीतलप्रसादजी ने प्रयास किया; पर उसे सफल प्रयोग नहीं कहा जा सकता।

पण्डित टोडरमलजी ने सम्यग्दर्शन की परिभाषा लिखते समय न तो आचार्य उमास्वामी के तत्वार्थसूत्र को प्रस्तुत किया और न आचार्य समत्तभद्र के रत्नकरण्डश्रावकाचार को ही याद किया; मुख्यरूप से आचार्य अमृतचन्द्र के पुरुषार्थसिद्धयुपाय को ही आधार बनाया।

यद्यपि बाद में सम्यग्दर्शन की प्राप्त सभी परिभाषाओं में सतर्क समन्वय स्थापित किया है; तथापि मुख्यता इसी को दी।

तत्त्वार्थश्रद्धान में तत्त्व और अर्थ – इन दो पदों (शब्दों) का प्रयोग करने के अभिप्राय को स्पष्ट करते हुए पण्डितजी लिखते हैं –

''यहाँ प्रश्न है कि 'तत्त्व' और 'अर्थ' यह दो पद कहे, उनका प्रयोजन क्या?

समाधान :– 'तत्' शब्द है सो 'यत्' शब्द की अपेक्षा सहित है; इसलिये जिसका प्रकरण हो उसे तत् कहा जाता है और जिसका जो भाव अर्थात् स्वरूप सो तत्त्व जानना। कारण कि 'तस्य भावस्तत्त्वं' ऐसा तत्त्व शब्द का समास होता है।

तथा जो जानने में आये ऐसा 'द्रव्य' व 'गुण–पर्याय' उसका नाम अर्थ है। तथा 'तत्त्वेन अर्थस्तत्त्वार्थः' तत्त्व अर्थात् अपना स्वरूप, उससे सहित पदार्थ उनका श्रद्धान सो सम्यग्दर्शन है।

यहाँ यदि तत्त्वश्रद्धान ही कहते तो जिसका यह भाव (तत्त्व) है, उसके श्रद्धान बिना केवल भाव ही का श्रद्धान कार्यकारी नहीं है। तथा यदि अर्थश्रद्धान ही कहते तो भाव के श्रद्धान बिना पदार्थ का श्रद्धान भी कार्यकारी नहीं है।

जैसे किसी को ज्ञान–दर्शनादिक व वर्णादिक का तो श्रद्धान हो – यह जानपना है, यह श्वेतपना है, इत्यादि प्रतीति हो; परन्तु ज्ञान–दर्शन आत्मा का स्वभाव है, मैं आत्मा हूँ; तथा वर्णादि पुद्गल का स्वभाव है, पुद्गल मुझसे भिन्न–अलग पदार्थ है; ऐसा पदार्थ का श्रद्धान न हो तो भाव का श्रद्धान कार्यकारी नहीं है।

तथा जैसे 'मैं आत्मा हूँ' – ऐसा श्रद्धान किया; परन्तु आत्मा का स्वरूप जैसा है, वैसा श्रद्धान नहीं किया तो भाव के श्रद्धान बिना पदार्थ का भी श्रद्धान कार्यकारी नहीं है। इसलिये तत्त्वसहित अर्थ का श्रद्धान होता है सो ही कार्यकारी है।

अथवा जीवादिक को तत्त्वसंज्ञा भी है और अर्थ संज्ञा भी है, इसलिये 'तत्त्वमेवार्थस्तत्त्वार्थः' जो तत्त्व सो ही अर्थ, उनका श्रद्धान सो सम्यग्दर्शन है।

इस अर्थ द्वारा कहीं तत्त्वश्रद्धान को सम्यग्दर्शन कहे और कहीं पदार्थश्रद्धान को सम्यग्दर्शन कहे, वहाँ विरोध नहीं जानना।

इस प्रकार 'तत्त्व' और 'अर्थ' दो पद कहने का प्रयोजन है।[१]''

उक्त कथन में यह बात अत्यन्त स्पष्ट है कि चाहे अकेला तत्त्वश्रद्धान लिखा हो या अकेला अर्थश्रद्धान लिखा हो या तत्त्वार्थ श्रद्धान लिखा हो – तीनों का एक ही अर्थ है। तात्पर्य यह है कि जीवादिक पदार्थों का स्वरूप तत्त्व और अर्थ – दोनों दृष्टियों से जानना–मानना आवश्यक है। न केवल उन्हें जानना ही है, अपितु उनके बीच जो भेद है, उसे भी जानना है। तात्पर्य यह है कि भेदविज्ञानपूर्वक जानना है, उसमें हेय–उपादेय का ज्ञान भी करना है। तत्त्वार्थश्रद्धान का यही स्वरूप है। **(क्रमशः)**

१. पुरुषार्थसिद्धियुपाय, मंगलाचरण छन्द ५

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, नौवाँ अधिकार, पृष्ठ ३१५–३१६

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

2 फरवरी 2012, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J.P.C / FN-32 / 2012-14

पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव सानंद संपन्न

राघौगढ (म.प्र.) : यहाँ श्री आदिनाथ कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन परमागम मन्दिर ट्रस्ट राघौगढ द्वारा आयोजित श्री 1008 आदिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन दिनांक 19 से 25 जनवरी 2012 तक अनेक विशिष्ट कार्यक्रमों सहित सानन्द सम्पन्न हुआ।

महोत्सव में अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान **डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल** के प्रतिदिन समयसार के निर्जरा अधिकार पर प्रवचनों का लाभ मिला। आहारदान एवं दीक्षाकल्याणक पर हुआ आपका प्रवचन भी सराहनीय रहा। आपके अतिरिक्त पण्डित विमलदादा झांझरी उज्जैन, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड, पण्डित सुशीलजी इन्दौर, पण्डित रूपचंदजी बंडा, पण्डित गुलाबचंदजी बीना इत्यादि अनेक विद्वानों के भी प्रवचनों का लाभ उपस्थित जनसमुदाय को मिला।

पञ्चकल्याणक की सम्पूर्ण प्रतिष्ठा-विधि प्रतिष्ठाचार्य ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली ने पण्डित सुनीलजी धवल भोपाल, पण्डित कांतिकुमारजी इन्दौर, पण्डित अशोकजी शास्त्री राघौगढ आदि के सहयोग से शुद्ध तेरापंथ आम्नायानुसार सम्पन्न कराई गई।

पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के तीसरे दिन तीर्थङ्कर के गर्भ कल्याणक के अवसर पर देवों द्वारा पुष्पवृष्टि का दृश्य और तीर्थङ्कर की माता को दिखलाये जाने वाले सोलह स्वप्न का प्रदर्शन सभी उपस्थित दर्शकों द्वारा सराहा गया।

बालक ऋषभकुमार के माता-पिता बनने का सौभाग्य श्री अशोककुमार-विजयकुमारी गुना को प्राप्त हुआ। महोत्सव के सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी श्री सुधीरकुमार-सोनिया जैन भोपाल थे।

इस अवसर पर भगवान आदिनाथ की प्रतिमा के विराजमानकर्त्ता श्री विपिनकुमारजी दुबई, भगवान शांतिनाथ की प्रतिमा के विराजमानकर्त्ता श्री सुधीरजी जैन भोपाल एवं सीमंधर भगवान की प्रतिमा के विराजमानकर्त्ता श्री मुकेशजी जैन ढाईद्वीप इन्दौर थे। नेमिनाथ भगवान की खड़गासन प्रतिमा के विराजमानकर्त्ता श्री केवलचंद-दिनेशकुमार-डॉ.वीरेन्द्र रावत परिवार राघौगढ और श्री पार्श्वनाथ भगवान की खड़गासन प्रतिमा के विराजमानकर्त्ता श्री विमलचंद एन्ड सन्स राघौगढ थे।

महोत्सव के ध्वजारोहणकर्त्ता श्री राजेन्द्रकुमारजी अशोकनगर थे। प्रतिष्ठा मण्डप का उद्घाटन श्री रमेशचंद चौधरी (अध्यक्ष-जैन समाज अशोकनगर) ने एवं प्रतिष्ठा मंच का उद्घाटन श्री कैलाशचंदजी शिखरचंदजी आरोन ने किया। राजा श्रेयांस श्री बाबूलाल चक्रेशकुमार परिवार अशोकनगर थे।

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा कमेटी के अध्यक्ष श्री शिवरतनजी जैन, कार्याध्यक्ष डॉ.अजितजी रावत, महामंत्री श्री प्रेमचंदजी भारिल्ल, कोषाध्यक्ष श्री विमलचंदजी जैन, स्वागताध्यक्ष श्री विजयकुमारजी जैन, उपाध्यक्ष श्री शीतलचंदजी कोठारी, श्री दिनेशजी रावत, श्री अशोकजी भारिल्ल व श्री राजेन्द्रजी (मेडिकल) थे।

दिनांक १९ जनवरी को कु. वीणा अजमेरा का १०८ कलशों के साथ नृत्य एवं दिनांक २३ जनवरी को राघौगढ व उज्जैन के कलाकारों द्वारा 'चैतन्य-चमत्कार' नृत्य नाटिका का मंचन विशेष आकर्षण का केन्द्र रहा।

दिनांक २२ जनवरी को जन्म कल्याणक के अवसर पर ८ हाथी, ५ बग्गी, दो घोड़े और ११ बैण्ड सहित जुलुस निकला।

पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के पावन अवसर पर दिनांक २४ जनवरी को महोत्सव समिति ने समस्त विद्वानों, अतिथियों एवं कार्यकर्ताओं का सम्मान एवं आभार व्यक्त किया। संचालन श्री अशोकजी मांगुलकर एवं आभार प्रदर्शन श्री प्रेमचंदजी भारिल्ल ने व्यक्त किया।

संपूर्ण महोत्सव में पूजन, प्रवचन, भक्ति एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों की धूम मची रही।

प्रशिक्षण शिविर की बैठक संपन्न

सागर (म.प्र.) : यहाँ श्री तारणतरण चैत्यालय में ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण शिविर के संबंध में दिनांक 10 जनवरी को बैठक संपन्न हुई।

इस अवसर पर पण्डित रूपचंदजी बंडा के प्रवचन का लाभ मिला।

शिविर की विस्तृत रूपरेखा संयोजक श्री प्रमोदजी जैन ने प्रस्तुत की। इसमें आर्थिक सहयोग हेतु सागर से 100 कि.मी. की दूरी तक सकल समाज को अग्रिम पत्र भेजा जाने का निर्णय लिया गया।

इसके अतिरिक्त दिनांक 8 से 12 मार्च तक विद्यमान बीस तीर्थंकर विधान एवं वार्षिकोत्सव मनाया जाने का भी निर्णय लिया गया, जिसमें पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर एवं पण्डित कमलचंदजी जैन पिड़ावा के प्रवचनों का लाभ मिलेगा।

प्रकाशन तिथि : 28 जनवरी 2012

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127